Vol 5 Issue 1 Feb 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume-5 | Issue-1 | Feb-2015
Available online at www.isrj.org

भारत में नारीवाद

रेणु विहान

राजनीति विज्ञान विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान।

सारांश *:–*भारत में लम्बे समय तक नारीवाद को पश्चिमी परिप्रेक्ष्य से जोडकर देखा जाता रहा है, जबकि यहाँ (भारत में) पर पृित सत्तात्मक समाज हर युग में मौजूद रहा है। वर्ण, जाति, वर्ग, और धर्म समुच्चयों ने परिस्थितियों को ओर अधिक जटिल बना दिया है, जिसे तोडना नारी के लिए मुश्किल प्रतीत हो रहा है।

प्रस्तावना :–

नरीवाद एक प्रकार का दर्शन है, जो समाज में नारीयों की निम्न स्थितियों के कारको की पडताल करने और उसमें सुधार करने आवश्यकता पर बल देता है। नारीवाद अंग्रेजी के शब्द थ्मउपदपेउ का पर्याय है। समाज में नारी के बौद्धिक, राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों को थ्मउपदपेउ के नाम से जाना जाता है। वृंदा कारात के अनुसार–‘‘नरीवाद एक विचारधारा है जिसके आधार पर महिलाओं की मुक्ति के प्रयास किये जाते है। ‘‘ कत्यायनी के अनुसार–‘‘नारीवाद स्त्री मुक्ति–चिंतन की महज एक विचार सारणी है और कुछ नही है। ‘‘

भारतीय नारीवाद भारत की प्रबुद्ध नारीयों और विचारकों के चिंतन की उपज है, जिसका प्रमुख ध्येय सामांती व्यवस्था द्वारा स्थापित गुलामी से स्त्री को मुक्त करना है। इसमें पुरुष वार्चस्व एंवम् मनुवाद का विरोद्ध है, दूसरी और भारतीय जीवन मूल्यों की नवीन सन्दर्भों में पुनः व्याख्या एंवम् पुनःस्थापना का प्रयास भी है।

भारत में नारीवाद के तीन चरणों में विभाजित करके देखा जा सकता है। पहला चरण १८५० से १९१५ तक, दूसरा चरण १९१५ से १९४५ तक, तीसरा और अंतिम चरण १९४५ से वर्तमान तक।

पहला चरण का प्रारम्भ १९ वीं सदी के मध्य १८५० से १९१५ तक का समय माना जाता है। जब अंग्रजो द्वारा सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुप्रथा की आलोचना की। हालाकि चरण का शुभारम्भ पुरुषों द्वारा किया। सामानता, स्वतन्त्रता और व्यक्ति अधिकार नारीवाद का आधार बना। धीरे– धीरे महिला आंदोलनों की पृष्टभूमि तैयार होने लगी। जाति और लिंग आधारित विचारधारा के तहत किया जाने वाला भेद–भाव समाज सुधार का केन्द्र बना। अर्थात इसका मुख्य उदेश्य समाज में व्याप्त कुप्रथाओं और बुराईयों का अन्त जिसमें सती प्रथा, विधवा विवाह, बाल विवाह, नारी निरक्षता का उन्मूलन जैसे लक्ष्य सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त सम्पत्ति के अधिकार आदि के लिए भी संघर्ष किये गये। इस दौर में स्त्रियों की दशा सुधारने के लिये अनेक कानून बनें।

भारतीय नारीवाद का दूसरा चरण १९१५ से १९४५ तक का समय माना जाता हैं। जब राष्ट्रीय आंदोलनों ने महिलाओं को घर की चौखट से बहार निकाल कर सार्वजनिक विषयो से जोडा। इस समय औपनिवेशिक शासन के खिलाफ तीव्र हो चुका था। तीस व चालीस के दशक तक नारी सक्रियता की एक विशेष श्रेणी का निर्माण हुआ। इसके परिणाम स्वरूप भारतीय स्त्रीत्व को भी परिभाषा किया जा रहा था। अंहिसा असहयोग आंदोलन में शामिल कर उनकी गतिविधियों को गॉधी जी द्वारा विस्तार दिया गया। यह वह समय था जब भारतीय नारीवाद के परिदृश्य पर स्वतंत्र महिला संगठनों का निर्माण किया गया। ‘ऑल इडिया वूमन कॉनफेंस‘ और ‘नेशनल फेडरेशन ऑफ इडिया वूमन‘ का गठन हुआ। अब नारीवाद का सम्बधं राजनीतिक भागेदारी, वोट का अधिकार आदि हो गए जबकि इस दौर के नारीवाद ने राष्ट्रवाद और उपनिवेशवाद विरोध स्वाधीनता आंदोलन के भीतर काम किया। फलतः व्यापक स्तर पर महिलाओं भागेदारी स्वाधीनता आंदोलन की विशेषता रही। १९ वी सदी के समाज सुधारको का तर्क प्रस्तुत किया कि स्त्री की पुरुषों से भिन्नता के कारण उन्हे हेय समझने का कोई अर्थ नही है, वही बाद के समाज सुधारको ने तर्क दिया कि इस भिन्नता आधार पर ही स्त्रियों

को समाजिक तौर पर उपयोगी ;मॉ के रुप मेंद्ध माना गया। जब महिलाएं खुद इन अभियानो में भाग लेने लगी तो उन्होने इस बिन्दु ‘मॉ‘ को जोरदार तरिके से उठाया। नारी शक्ति की अवधारणा के अनुसार राष्ट्र माता के रुप में, रक्षा करने वाली, उग्ररुप धारिणी, महाकाली के रुप में तथा गॉधीवादी विचारको के अनुसार स्त्री को कष्ट सहने वाली मॉ के रुप में देखा गया।

भारतीय नारीवाद का तीसरा चरण १९४५ से लेकर वर्तमान समय तक माना गया। इसका प्रारम्भ कार्य स्थलो पर और राजनीतिक दलों के भीतर स्त्रियो के साथ न्यायपूर्ण व्यवाहार की मांग के साथ हुई। संविधान में लिंग समानता के यूटोपिया ने नारीवादी आंदोलनों को नई गति प्रदान की और स्त्री की दशा में सुधार के अनेक अभियान उदार लोकतान्त्रिक आधार पर चलाए गए।

आजादी से पहले नारीवादी एक ओर लिंग आधारित अपनी परिभाषा तक ही सीमटें रहे, वही दूसरी ओर भिन्नता और सम्मान के बावजूद बराबरी पर आधारित वजूद की कोशिशकरते रहें। स्वतत्रंत भारत का नारीवाद ;नारी आंदोलनद्ध महिलाओं की उपेक्षा, शेषण और श्रम में लिंग आधारित भेद–भाव को समाप्त करने तथा बराबरी के सिंद्धात का दृढ़ता पूर्वक पालन करने की नीती के साथ शुरु हुआ। अब स्त्री मातृ छवि को तोडकर काम काजी महिला के रुप में सामने आयी। परिणाम स्वरुप स्वाधीनता से पूर्व नारी आंदोलन जो स्त्री– पुरुष सम्बंधों पर टिका था। वह एक ही झटके में दूसरी ओर मुड गया। महिलाऍ आर्थिक निर्भरता प्राप्त करने की ओर अग्रसर हुई। वर्ग चैतन्य से महिलाऍ संगठित एवं एकजुट होने लगी, और उन्होने श्रम राजनीति में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। १९ वी सदी के आरम्भिक वर्षों की भारतीय स्त्रियों के कष्टो और उनके सुधार की आवश्यकता की परिभाषा २० वी सदी के आरम्भ तक बदल गयी तथा सारा ध्यान स्त्रियों को समाज का जिम्मेदार सदस्य समझने पर केन्द्रित हो गया और २० वी सदी के उत्तरार्ध तक महिलाओं द्वारा अपने जीवन के बारे में स्वंम निर्णय लेने के अधिकार की मांग उठायी। अतः आंदोलनों की दिशा और मांग समय और परिस्थितियों के आधार पर बदलती रही, अब वह आत्म निर्णय और आत्म निश्चय के अधिकारो की ओर मुड गयी। अर्थिक उदारीकरण और औपनिवेशिकता के दौर में महिलाओ के समक्ष एक चुनौती पेश की। पर्यावारण और प्राकृतिक विरासत की रक्षा की धारा भारतीय नारीवाद को इकोफेमिनिज्म से भी जोडती हैं।

नारीवादी आंदोलन द्वारा नारीवाद ने दो स्तरो पर स्त्रीयो के अधिकारों की वकालत की है। एक व्यक्तिगत पंसद या ना पंसद के अधिकारो को स्थापित करने के स्तर पर और दूसरे सामुहिक अधिकारो के स्तर पर। व्यक्तिगत पंसद या ना पंसद के अधिकारो के तहत एक लम्बें सघर्ष के बाद यह मूल्य स्थापित किया गया कि स्त्री का शरीर उसका अपना है, और शरीर सम्बंधी सारे निर्णय लेने का हक उसका अपना है। सामुहिक अधिकारो के तहत नारीवादी ने पैतृक सम्पत्ति में लडकियों की समान भागेदारी, उत्पीडक वैवाहिक सम्बंधो से अलग होने के लिए तलाक का अधिकार, स्त्रियो का सम्मान जनक रोजगार, और समाज व राजनीतिक के स्तर के निर्णय में स्त्रियो की समान भागेदारी के मुद्दे उठाए गए।

निष्कर्षतः–

निजी और सामुहिक दोनो ही अधिकारो की लडाई अभी कुल मिलाकर प्रारम्भिक चरण में ही है। सिंद्धात और विचार के आधार पर जिन स्त्री अधिकारो को स्थापित करने में सफलता मिली है, उन्हे परिवार और समाज के स्तर पर अभी आम तौर पर व्यवहारिक रुप नही दिया गया हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

१.कारात वृदां, जीना है तो लडना होगा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, २००७,पृ.स. ६
२.कत्यायनी, कुछ जीवन्त, कुछ ज्वलंत, परिकल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली,२००६, पृ.स. १५६
३.मलती के. एम.,स्त्री विमर्शः भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१०, पृ.स. ६८
४.कुमार राधा, स्त्री सघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २००६, पृ.स. १२
५.कुमार राधा, स्त्री सघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २००६, पृ.स. १५
६.राज किशोर ; संपाद्ध, स्त्री परम्परा और आधुनिकता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २००४, पृ.स. ४७
७.www.jansatta.com/index.php/component/content/article/ Accessed on 17 Jan /2013
८.www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id Accessed on 15/Jan/2013
९.राज किशोर ; संपाद्ध, स्त्री परम्परा और आधुनिकता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २००४, पृ.स. ४८

रेणु विहान
राजनीति विज्ञान विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org